अध्याय एक

संत कबीर दास

[संत कबीरदास भोजपुरी के आदिकवि हईं। इहाँ के जनम बनारस में 1518 ई. में भइल रहे। इहाँ के भगवान के निराकार रूप के सुमिरन कइले बानी।

कबीर जात-पात, छुआछूत, पूजा-नमाज, धार्मिक पाखंड आदि पर प्रहार कइनी इहाँ के हिंदू-मुस्लिम दूनों के फटकरनी। इहाँ के विचार आजो प्रासंगिक बा। 'बीजक' इहाँ के प्रसिद्ध रचना हवे, जवन तीन खंड में बा- साखी, सबद, रमैनी। अपना भाषा के बारे में इहाँ के कहले बानी-

बोली हमरो पूरुब की, हमे लखे नहीं कोय।
हमके तो सोई लखे जे धुर पूरब के होय॥

कबीर दास के जन्मदिन के भोजपुरी दिवस का रूप में मनावल जाला।]

: 1 :

साहेब मोर बसले अगमपुर हो, जहाँ गम न हमार ।टेक॥
आठ कुआँ, नव बावलि हो, सोरह पनिहार ।
भरले घइलवा ढरकि गइले हो, धनि ठाढ़े पछिताय ।
छोटी मोटी डँड़िया चनन कइ हो, लगले चारि कहार ॥
जाइ उतरले ओहि देसवा हो, जाहाँ केहु न हमार ।
ऊँचकी महलिया साहब कइ हो, लागे विषम बजार ॥
पाप पुन्नि दुइ बनिया हो, हीरा रतन बिकाय ॥
कहत कबीर सुनु सइयाँ हो, मोरे अबहिय देस ।
जे गइले से बहुरले ना हो, के कहसु सनेस ॥

: 2 :

तोर हीरा हिराइल बा किचड़े में ।
केहू ढूँढ़ै पूरब केहू ढूँढ़े पच्छिम ।
केहू ढूँढ़ै पानी-पथरे में ।

दास कबीर ये हीरा को परखैं ।
बाँध लिहलै जीयरा के अँचरे में ।

❑

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कबीर के जन्मस्थान कहाँ बा ?
2. कबीर के माता-पिता के नाँव बताईं ?
3. प्रस्तुत पद में कबीर **'साहब'** केकरा के कहले बानी ?
4. कबीरदास कवना पंथ के मानत रहीं ?
   (क) सगुन (ख) निरगुन
   (ग) सगुन निरगुन दूनों (घ) कवनो ना
5. कबीरदास कवना काल के कवि रहीं ?
   (क) आधुनिक काल (ख) आदिकाल
   (ग) भक्तिकाल (घ) रीतिकाल
6. हीरा कहवाँ हेराइल बा ?
   (क) अगमपुर में (ख) किचड़ में
   (ग) कुआँ में (घ) बावलि में

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. कबीरदास अपना 'साहेब' के घर 'अगमपुर' बतवले बानीं, काहे
2. कबीरदास जी अपना प्रीतम से हृदय में बसे के कहत बानीं, काहे ?
3. 'पाप पुन्नि दुइ बनिया हो हीरा रतन बिकाय' के अर्थ का बा ?

4. 'ईश्वर के सनेस सुनावे वाला केहू नइखे' एकर का ओजे कबीरदास बतावत बानीं ?
5. 'जाइ उतरले ओही देसवा हो जहाँ केहू ना हमार' -अइसन कबीरदास जी काहे कहले बानीं ?
6. 'आठ कुआँ, नव बावलि हो, सोरह पनिहार' -के अर्थ बतलाईं ।
7. 'हीरा हेराइल बा किचड़े में' कबीरदास जी 'हीरा' आ 'किचड़' कथी के कहले बानी ?
8. कबीरदास जी 'हीरा' के परख के कहवाँ बान्ह लेले ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पहिला निरगुन के अर्थ लिखीं ।
2. 'आठ कुआँ, नव बावलि हो, सोरह पनिहार, भरले घइलवा ढरकि गइले हो, धनि ठाढ़े पछिताय ।' एकर अर्थ बतलाईं ।
3. कबीर के अइसन पदन के 'निरगुन' कहल जाला, काहे ?
4. हीरा के लोग कहवाँ ढूँढ़ रहल बा ? एह खोज-बीन के मतलब का बा ?
5. 'तोर हीरा हेराइल बा किचड़े में' पद में कबीरदास का कहे के चाहत बानी ?

परियोजना कार्य

1. रउवा अगल-बगल रहे वाला केहू बूढ़-पुरनिया से कबीर के निरगुन सुनीं । अइसन तीन गो पद लिख के शिक्षक से देखाईं ।

अध्याय दू

राहुल सांकृत्यायन

[राहुल सांकृत्यायन के जनम 1893 में आजमगढ़ जिला (उत्तरप्रदेश) के पंदहा गाँव में भइल रहे । बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी राहुल जी पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, तिब्बती, चीनी, जापानी, रूसी, अंग्रेजी, हिंदी, भोजपुरी सहित तैतीस भषन के जानकार रहीं । उहाँ के आजादी के लड़ाई आ किसान आंदोलन के नेतृत्व करत जेलो गइनी । साहित्य के संगे-संगे उहाँ के दर्शन, राजनीति, धर्म, इतिहास, विज्ञान, पुरातत्त्व जइसन विषय पर डेढ़ सव से अधिक मानक किताब लिखनी । उहाँ के महत्त्वपूर्ण किताब बाड़ी सन-वोल्गा से गंगा दिवोदास, जीने के लिए, बाईसवीं सदी, सिंह सेनापति, मेरे असहयोग के साथी, मध्य एशिया का इतिहास, भागो नहीं दुनिया को बदलो, दिमागी गुलामी, तुम्हारी क्षय, मेरी जीवन यात्रा, दर्शन-दिग्दर्शन, हिंदी काव्यधारा ।

राहुल जी अपना मातृभाषा भोजपुरी में भी कलम चलवनी । भोजपुरी में उहाँ के आठ गो नाटक लिखनी । एकरा अलावे उहाँ के निबंध, भाषण, पत्र भोजपुरी में बा । 'जोंक' भोजपुरी के प्रसिद्ध नाटक हवे । एकर पहिला अंक एह में दिहल जाता । एकर रचना 1942 में भइल रहे । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दूसरका अधिवेशन (गोपालगंज) के इहाँ के अध्यक्षता कइनीं ।]

जोंक

नोहर राउत- मुखिया
बुझावन महतो- किसान ।
सिरतन लाल- जिमदार के पटवारी ।

(गीत गावल जाति-आ)

हे फिकिरिया मरलस् जान ।
साँझ बिहान के खरची नइखे, मेहरी मारे तान ॥
अन्न बिना मोर लड़का रोवैं, का करी हे भगवान् ॥ हे...॥
करजा काढ़ि-काढ़ि खेती कइलीं, खेतवै सूखल धान ।
बैल बेंचि जिमदरवा के देनीं, सहुआ कहे बेड़मान ॥ हे...॥

(बुझावन महतो एगो फाटल-मइल धोती पहिरले खड़ा बाड़े । एही घरी नोहर राउत के आँखि बुझावन महतो के फिल्ली पर पड़ल, ऊ झट से फिल्ली से कौनो चीजु नोच के बुझावन से कहलै)

नोहर : हई देखा बुझावन महतो ।

बुझावन : (थथमि के) नोहर भाई ! फेंकऽ होने, फेंकबो करबो,

हमरा पंजरा जनि लेआवा, का दु करिया-करिया हिल्लत-आ।

नोहर : तोहरे फिल्ली में से निकलनी हाँ, देख नु हई गोड़ लोहू-लोहान भइल बा । ना जानी केतना बेरि से लागल रहल हा ।

बुझावन : (खून से समुच्चा फिल्ली के भीजल देखि के) जोंक लागल रहल हा, नोहर भाई! हमार माथा घूमत-आ । (बइठि गइले)

नोहर : (बइठि के घाव के मुँह अँगुरी से दाब के) भइंसवा जोंक हा बुझावन । आपन मतलब क चुकल बा । हो देखऽ नु अँउठा अइसन मोट बा ।

बुझावन : ओकरा ओर देखे के मन नइखे करत । पाव भर खून पियले होई नोहर भाई ?

नोहर : ना, पाव भर ना, पाव भर बहुत होला, मुदा कनवा छटाँक से का कम होई । केतना त खून बहि गइल हा । तोहरा मालूम ना भइल ह बुझावन ?

बुझावन : जोंकि के लागल ना नु मालूम होखे। हम पोखरा में भइंसिया के धोवली हाँ, मिगडाह नु तपल बा, रोहिनी के पानी बरिसि गइल बा, से पोखरवा में नयका पानी बहुत बा, नयका पनिया में ना जाने कहाँ से छैंटी के छैंटी जोंक ऊपर भइल बाड़ीसन ।

नोहर : तोहरा तनिको ना बुझाइल हा ?

बुझावन : ना नोहर भाई ! हम अपना भईंसिया के ढोढ़ी से चारिगो जोंक निकारि के बिगले रहली हँ, बाकी हमरा ई ना पता रहल ह, कि हमरो जोंक लागल बा ।

नोहर : अदिमी के खून मीठ होला बुझावन ! ऊ एक कनवा पी के मोटाइल बा । हम फेंकि देनी, देखा इतना पिअले बा, कि मुँह से खून निकरि रहल बा । मुदा पाकी ना, लोग कहेला जोंकि के काटल घाव पाके ना ।

बुझावन : साँचे नोहर भाई ! नाहीं त हमार भईंसिया त सरि के मुइ गइल रहित, रोजे ओकरा देहि से चार गो पाँच गो बीगीले । भगवान एहनी के काहे के बनौलें ?

नोहर : हमनी के देहि में जम्मा-पूँजी नवे सेर खून बतावल जाला ।

बुझावन : त एक्कै कनवा निकरला से कपार में घुमरी काहे आवेले नोहर भाई ?

नोहर : घुमरियै के पूछत बाड़ा, बेसी खून गिरि गइला पर अदिमी मरि जाला। गोड़ के मोटकी नस काटि दा, जे खून ना बन्न होई, त अदिमी मर जाई। दुई मन के समुच्चा देहिं में उहै नौ सेर खून फइलल बा ।

बुझावन : छोड़ दा, नोहर भाई, अब बन्न हो गइल होई ?

नोहर : (हाथ हटा के) हाँ खून बन्न हो गइल ।

बुझावन : (उठि के जोंक पर हुमचि-हुमचि के पाँच-छ एड़ी मार के) नोहर भाई! देखा केतना खून बहता, ई जोंकिया सुटुकि के पातर हो गँइल, बाकी मूअल ना ।

नोहर : जोंकि के जिउ बड़ा कठकरेजी होला! बुझावन ! ऊ जल्दी ना नु मूवै ।

बुझावन : हाँ, नोहर भाई ! लोग त कहेला कि सुखा के पीस के फेंक दीहल जाय, तबहूँ बरखा के पानी बरसते जोंक फेनु जी जाले ।

नोहर : ई हमरा नइखें मालूम, बाकी जोंकि बड़ कठकरेजी होले, ई देखतै बाड़ा ।

(गाँव के पटवारी सिरपर लाल टोपी-मिरजई पहिरले, कान में कलम खोसलें अइलें ।)

बुझावन : सलाम देवान जी! कहाँ घुमतानी ?

सिरतन : मालिक के दु मन घिउ, पाँच मन दही, दु गाड़ी कटहर केतना कुली दे के अबगे बिदा कइनी हाँ, तीन दिन से परसान-परसान रहनी हाँ, बुझावन महतो! आज इहै जाके साँस लेहनी हाँ ।

बुझावन : देवान जी ! ई पँच-पँच मन दही, दु-दु गाड़ी कटहर, एगो खस्सी हमहूँ देहनी हाँ, फेनु सुनतानी गाँव से बारह गो

खस्सी अउर गइल हा, मालिक के छगो परानी ई कुलि ले के का करिहैं ?

सिरतन : तूहूँ नोनिये भुचेंग रहि गइला । बड़का लोग के अपने देह ले नानु होखे । एक आदमी के पीछे पचास गोजियैंला । तौनो में ई त बबुई जी के बियाह के सरजाम नु हवे ?

बुझावन : एगो बरात के सरजाम त हमरे गाँव से गइल हा, फेनु हमनी के मालिक के छप्पन गो मौजा बाटे, ई कुल्ह रखहू के जगह त ना होई ।

सिरतन : राखै के कौन बात लेले बाड़ा, देखले नइखा, भंडारघर केतना बड़ बा ? भंडारी के हाथ में चाभी के झब्बा नइखा देखले ? फेनू सरकार संतोखी साह के गोला खाली करा देले बाड़ें ।

नोहर : हाँ, जब गाँव भर के घर खाली करा दीहल जाय, त छप्पन मौजा का छसै मौजा के चीज-बतुस राखल जा सकैले ।

सिरतन : बुझावन महतो! अबकी चला नु तुहीं, का केहू सवाँग के भेजबा मरदे! उहाँ दुसै ले त नोनियै जुटिहें।

नोहर : बाबू के घरे बरात आई; औ ई दु सै नोनिया जुटि के का करिहैं?

सिरतन : फरुहा-कुदार के बहुत काम रहैला नोहर ! बबुआजी के

बियाह भइल रहल, त गइल न रहला?

नोहर : ना देवान जी! सुनी ले खाये बिना गति बनि जाले, एही से ना जाईं ।

सिरतन : खाये के तकलीफ न होले, हमरा त नइखे भइल।

बुझावन : अपने के का होई, अपने के त बहनोईये बाड़े दरबार में । बाकी देवान जी! एक ओर से लूट लागल बा। अदिमी बर-बेगारी में अपना कपारे चीज-बतुस लादि के दस कोस पहुँचावे जाला । मर-मजूरी त का मिली, अपना घर से सुतआ बान्हि के जाईले, इहो ना होला कि हमनी के जुरतै छुट्टी मिल जाओ; चारि दिन चिट्ठियै-पुरुजा देवे में लगा देलें।

सिरतन : एमें सरकार के कौनों दोस नहखें बुझावन महतो! दरबार में अइसहीं चलेला। एगो सरकार के पाछे हजार गो अदिमी जीयलें। बड़का के इहे नु ह?

नोहर : आठ आना रुपया महीना जब तनखाह दिआई, त अदिमी का करी देवान जी ! ई त मालिक के नु सोचे के चाही कि रुपया-आठि आना महिना में रहवाहो-चरवाह आजकल के दिन में ना मिली।

बुझावन : तीन ढेबुआ सेर त मडुआ बा नोहर भाई! औ ढेबुआ सेर महुआ।

नोहर : मदुओ-महुआ से गुजारा करे त खाली खोराकी में एक अदिमी का डेढ़ रुपया महिना लग जाई, आपन कपड़ा-लत्ता आ मेहरारू लइका के पोसे के त बातै फरका? मालिक ई नइखें देखत?

सिरतन : सनातन से दरबार में जेकर नोकरी लाग गइल बा, उहै चल जाति-आ। देखत नइख, हमार तनखाह पचीस रुपया साल हवे, दु रूपया के महिना ।

नोहर : मुदा देवान जी! अपने महरौली के बारह टोला के राजा बनि के बैठल बानी। छः हजार तहसील में रुपया पीछे दु पैसा केतना होला ?

बुझावन : ओ खाये-पीये में एको पैसा खरच ना होखे का ? घर भर के काम एहीं से चलैला ।

सिरतन : अब का अमदनी बा बुझावन महतो! हमरा बाबूजी के बखत देखतऽ, एही महरौली में सोना बरसत रहल हा ।

नोहर : महरौली में सोना अबहियों बरसता- देवान जी ! बाकी हमनी खातिर ना । पाँच हजार के तहसील अब छव हजार हो गइल । दु-दु पुहुत के जोतल खेत मालिक निकासि के जिरात बना लेहलें, दु सै बिगहा जिरात कबही रहल ह देवान जी ! ई हमनी का मुँहे जाब लगावल ह नू ?

बुझावन : आ सुनतानी मोटरवाला हर आवत बा, जौनों गाँव के चमार हरवाहा दु महिना जीअत रहले हाँ उहो बन्न भइल, ओकनी के मुँह के अन्न छूटल ।

सिरतन : बकास के झगड़ा जिला-जवार में ना उठल होइत, त ना नु निकलतें? सरकार के एमे कौनो खसूर नहखे ।

नोहर : ए देवान जी ! देखत-देखत आँख पाकि गइल । जान पड़ता कि महरौली में जेकर जनम-करम बा, जेकरा हजार पुहुत के हाड़ इहाँ गलि गइल, से किछुओ ना । औ दस कोस लमहरा ई अमहरा के बाबू साहेबे महरौली के सब कुछ बाड़े ।

सिरतन : नोहर राउत ! तोहार सिकाइत कई बेर हमरा कचहरी में चहुँपल ह, मोहित राउत के खियाल आवता, नाहीं त जानत नु बाड़ जिमदारी फन्ना ।

नोहर : देवान जी ! बाबू के खियाल मति करीं, जिनगी भर एगों भइंसि के उठौना बे पैसा के लगौले रहलें, आ, ओही से नु अपने के छोह बनल रहल हा ।

सिरतन : मालिक के जमीन में बसल बाड़, उनकरा निगाह से जीयत-खात बाड़, सेतिहे ना नु दही-दूध देल ?

नोहर : ए देवान जी ! बघउछ बाबा के चौरा अबहिन ले हमरा इहाँ हर साले पुजाला । महरौली कुल्ह जंगल रहै, जब

हमनी के पुरुखा अइलें । हमार, बुझावन आ अउर लोग के पुरुखा जंगल काट के खेत बारी बनौले; बघउछ बाबा लेखाँ कतना लोग के बाघ मुअवलस; घर के केतना बच्चन के हुँड़ार उठा ले गइल ।

बुझावन : हुंड़रहो त हाँ खानी हमरा दादा के होस तक होत रहल हा, नोहर भाई ।

नोहर : आ खेत बनावे में केतना अदिमी साँप के कटला से मू गइले, तब महरौली गाँव बसल, तब महरौली में सोना बरिसे लागल, तब ओही सोना के लूटे खातिर अमहरा के बाबू चहुँपले । अमहरा के बाबू के एको बुन्न पसीनों नइखै चूअल महरौली में ।

सिरतन : बिधि-बरम्हा के रेख पर मेख मारल तोहरा हाथ में नइखे ! तोहार अमहरा के गढ़ में नइखे जनम भइल नाहीं त तुहूँ दु लाख के तसील पर बइठता, मजिहटर साहेब तोहरो के खुरसी देते । आपन हसियत देख !

नोहर : ए देवान जी ! ई हमरा कहला के जबाब ना भइल । हमनी के जनम महरौली में भइल बा। हम त इहे जानी ले कि मतारी के थने में दूध पहिले आवेला, तब लइका जनम लेला । हमनी के जनम जब महरौली में भइल बा, त महरौली हमनिये के जीये -खाये खातिर हवे ।

सिरतन : जीअत-खात नइख ? महरौलिये का परताप से, बाबुए साहेब का परताप से नु ? जौना पतरी में खाये के ओही में छेद ना करे के नोहर राउत !

नोहर : बाबू साहेब के पतरी होई, त अमहरा में होई, महरौली में ना देवान साहेब ! महरौली ओही के हवे जेकर पुरुखा जंगल काटि के, बाघ-हुंड़ार मारि के एके अबाद कइले; महरौली में सोना बरसता, ओही हाथन के परताप से, जौनन में दस-दस गो ठेला पड़ल बा ।

सिरतन : तोहरा अकिल से सोचे के होई, तब नु ? मुदा, अन्हरा के आगे रोवै आपन दीदा खोवे । गँवार के बुधिये केतना ?

नोहर : लूटे के बुधि नइखे, खून चूसे के बुद्धि नइखे; बाकी माटी के सोना हइहे हथवा बनावेला देवान जी! छः हजार मालगुजारी द, तीन हजार बबुनी के बियाह में द, दु हजार मोटर के चिट्ठा में द, पान सै हाथी के चिट्ठा में द, तीन सै घोड़ा के चिट्ठा में द । साल भर बेगारी करत-करत मूअ । हेई मालिक के सवारी आइल, हेई मनेजर साहेब के हुकूम आइल, हेई पटवारी, हेई सवार, हेई सिपाही-पियादा, हेई गोराइत-बराहिल । दुत तोरी के । कमाई हमनी के, ओ हरियरो ना होये पाई, जेही आवत से ही कुपुटी के खा लेता ।

सिरतन : घास जेतने कटाले-नोचाले ओतने फुनगी फेंकेले । नोहर! तोहरा लोगन के एतना ना देवे के पड़ित, त इतना कमइबो ना करत ?

नोहर : कमा-कमा के मुवहीं भर हमनी के काम ह । ओ हमनी के कमाई में आगि लगावेवाला उहाँ अमहरा में केहू बैठल बा। बबुअर के बरात गइल रहल, त कै हजार अदिमी गइल रहले ? पाँच हजार त अतिशबाजी में उड़ावल गइल । बनारस, लखनऊ आ कलकत्ता तक के दसगो नामी-नामी तवायफ गइल रहलीं, ई केकरा कमाई से देवान जी ?

सिरतन : अपना भाग से नोहर राउत ! कमायेवाला कमाला, भागवाला खाला । 'करम प्रधान विस्व करि राखा । जे जस करे से तस फल चाखा ।' बाबू साहेब ओह जनम में करम कइले बाड़े । 'तप चुकि राज' भइल बा, तू ओह जनम के पापी हव, उहे भोगत बाड़ ? केहू का हिरिस कइला से ना किछुओ होला ।

नोहर : त हमनी जे ई घाम में खेत कोड़त-जोतत मूईले, बरखा में दिन भर भींजीले; धान रोपीले, घास सोहीले, जाड़ा पाला में कठुआते खेत में सत्ती होईले, ई करम किछुओ नइखे ?

बुझावन : हमरा सोझवा अदिमी के बुधि में त इहे आवता,कि भगवान जेकरा के जौना गाँव में जनम दिहले, भगवान की ओर से ऊ गाँव ओकरे लिखा गइल; बाकी कागज-पत्तर के बात, से भगवान कीओर से नइखे लिखा के आइल । महरौली के कचहरी से छपरा के कचहरी ले देखले नु बानी, कैसन कागज में इमानदारी राखल जाले ?

नोहर : बुझावन ! जे धरतीमाता के पाछे आपन खून-पसीना एक करेला, उहे इमानदारी के अन्न खाला, नाहीं त ई जिमदार बड़का जोंक हवें । बाप रे बाप! हमनी के देहि में इचिको रकत ना रहि गइल, हाड़ो-चाम एक-जगहा राखल मुसकिल बाटे, आ ओने गुलछर्रा उड़ता ।

(परदा गिरि जात बा)

(जोंक नाटक के पहिला अंक)

●

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'जोंक' के रचनाकार के हवे ?
2. 'जोंक' के रचना कब भइल ?
3. 'जोंक' में कई गो पात्र बाड़े ?
   (क) 3, (ख) 4, (ग) 5, (घ) कवनो ना ।
4. जोंक के मुख्य पात्र के हवे ?
   (क) नोहर राउत, (ख) बुझावन महतो,
   (ग) रामदास, (घ) लोटन साहु ।
5. जमींदार के पटवारी के रहे ?
   (क) नोहर राउत (ख) सिरतन लाल
   (ग) बुझावन महतो (घ) केहू ना

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. एह पाठ में 'जोंक' केकरा-केकरा के कहल बा ?
2. कवना बात के फिकिर किसान के परेशान कइले बा ?
3. आदमी का देह में कतना खून होला ?
4. जमीदार लोग कइसे आदमी के शोषण करत रहे ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नाटक कला के दृष्टि से 'जोंक' के परीक्षण करीं ।
2. राहुल सांकृत्यायन के भोजपुरी सेवा पर प्रकाश डालीं ।
3. आजादी का पहिले अपना देश के सामाजिक स्थिति कइसन रहे एह पर एगो अनुच्छेद लिखीं ।

परियोजना कार्य-

1. देश के कवना-कवना जिला में भोजपुरी बोलल जाला ? ओह जिला के नाम, कुल जनसंख्या आ कुल क्षेत्रफल पता लगाईं ।

अध्याय तीन

रामेश्वर सिंह काश्यप

[रामेश्वर सिंह काश्यप के जनम 16 अगस्त, 1927 के रोहतास जिला के सेमरा गाँव में भइल रहे। बी.एन. कॉलेज पटना में 1950 में हिन्दी के व्याख्याता आ बाद में एस.पी. जैन सासाराम में कालेज के प्राचार्यभइलीं। हिंदी-भोजपुरी के विद्वान, निबंध लेखक, कवि, कहानीकार आ नाटककार रही। भोजपुरी नाटक 'लोहा सिंह' का रेडियो रूपक के रूप में बड़ा प्रसिद्धि मिलल। उहाँ के नौंवे लोहा सिंह प्रचलित हो गइल। एह नाटक पर फिलिमो बनल जवना में काश्यप जी अभिनय कइलीं। भोजपुरी साहित्य के गद्य आ पद्य दूनू के भंडार भरे में काश्यप जी अगहर रहीं। उहाँ का मुक्त छन्द में भी कविता लिखलें बानीं। 'मछरी' उहाँ के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कहानी मानल जाले।]

मछरी

ताल के पानी में गोड़ लटका के कुंती ढेर देर से बइठल रहे । गोड़ के अँगुरिन में पानी के लहर रेसम के डोरा लेखा अझुरा-अझुरा जात रहे आ सुपुली में रह-रह के कनकनी उठत रहे, जे गुदगुदी बन के हाड़ में फइल जात रहे । कबहूँ झिंगवा मछरी एँड़ी भिरी आके कुलबुलाए लागत रहीसन, त सउँसे देह गेनगना जात रहे । कुछ दूर पर सरपत में बेंग टरटरात रहसन आ कवनो-कवनो जब तब पानी में कूद जात रहसन, जेकरा से ताल में चक्करदार हल्फा उठे लागत रहे आ तरेंगन के परछाहीं लहर पर टूटे लागत रहे ।

झींगुर के अजब मनहूस झनकार हवा में भर गइल रहे । नीम के फूल के गंध से मातल बेआर ढिमिलाइल फ़िरत रहे । दिन भर के तवँक से अउसाइल कुंती के मन भइल कि गते से पानी में उतर जाय आ अपना देह के पानी में बोर दे । चुहानी में साँझे से चूल्हा

फूँकत-फूँकत ओकर जीव उजबुजा गइल रहे । मारे पसेना के लुगा देह में सट गइल रहे, कसहूँ जीव जाँत के, सब केहू के बीजे करा के, फजिरे बरतन-बासन मले खातिर पानी ले आवे निकललि रहे । रात में डूभा, छीपा आउर बटुआ पानी में ना फुला दिआई, त बिहने जूठ अइसन खरकट जाई कि छोड़वले ना छूटी । बाकी, कुंती से पानी में उतरल ना गइल । अपना देह के आउर ढील के ऊ चुपचाप बइठल रहलि ।

बगले में, दहिने ओकरा घर के दुआर लउकत रहे । निकसार में ढिबरी धुआँत रहे । ढिबरी के मइलछहूँ लाल अँजोर में अपना पोंछ से मच्छड़ उड़ावत भँइस लउकति रहे । धवरा बैल कोना में बइठल पगुरावत रहे । कुंती के बुझाइल कि ओकर माई सूत गइल होई आ ओकर नाक फोंय-फोंय बोलत होई, बाबूजी भी आँख मूँद के महटिअवले होइहें आ दम्मा के मारे उनकर साँस अदहन लेखा हनर-हनर करत होई । सीतवा, गीतवा, मोतिया, गएत्रिया, अबिलखवा, कसिया- सब एके खटिया पर गुड़मुड़ा के होइह सन । कवनो के लात कवनो के मूँड़ी पर चढ़ल होई, कवनो के मूँड़ी लटकल होई, कवनो के गोड़ खटिया के ओरचन में बाझ गइल होई । अब ओकरा जाके सबके सोझ करे के परी । सब पिल्ला लेखा काँय-काँय किकिअइहन स आ माई काँचे नींदे जाग के अलगे अनरवाह करी-'अइसन कुलच्छन ई कुंतिया बिया, दिन-रात लइकन के डँहकावत रहेले, एकर बस चले त, ई सब के छछना-छछना के मुआ दिही ।'

बाबू जी अलगे अपना खटिया पर गुरगुरइहें –'काहे रोवावत बाड़िस रे, हमरा के जीए देबिस कि ना ? एक त हमार जीव अपने.... (खों खों).... ।' आ ऊ सब के ओइसहीं छोड़ दे, त माई लगिहें बिख बोले- 'एकर रहन देख के त हमार पित्त लहर जाता । काठ के करेजा हइस। पत्थल ह पत्थल। एकरा कवनो दम-फिकिर हइस ! लइका मूअ सन भा जीय सन ।'

घर के इयाद आवते कुंती के जीव उदास हो गइल, जइसे खँखार पर गोड़ पड़ गइल होखे । कुंती के ना चहला पर भी पहिले के याद ओकरा आँख के आगा पवँरे लागल ।

कुंती नौ बरिस के रहे, तबे ओकर माई मू गइल रहे । ओकरा अपना माई के मउअत सोझा लउके लागल । माई मउराइल बैंगन लेखा हो गइल रहे आ ढकना में लाल मिरचाई जरा के टहल ओझा बेंत पटक-पटक के ओझाई करत रहन, फिर माई के मूड़ी एक देने लटक गइल आ बुढ़िया मेहरारू सब सियार लेखा फेंकरे लगली स, आजी हमरा के कोर में जाँत के माई के गुन रो-रो के गावे लागल रहे । कुछ दिन बाद बाबूजी आ चाचा मूड़ी छिलवा लेलन, खूब भोज-भंडारा भइल आ छौ महीना बाद नइकी माई आइल । पहिले दिन ओठ बिजुका के हमरा के देखते पूछलस-'तूँही हमरा सवत के बेटी हऊ ?' हम मूड़ी हिला के कहलीं-'हूँ ।' तहिया से आज ले ऊ हमार जेतना साँसत कइलस, ओतना कवनो दुसमनो केहू के ना कइले होई । के जाने ओह जनम के कवना

कमाई से हम दस बरिस से जीयते, छछात नरक के भोग भोग लेलीं। माई के बरसाएने लइका भइल । पाँच गो त मूँ गइले स । ओकरो पाप माई हमरे कपार पर थोपेले कि ईहें हँड़साखिन मुअवलस । बाबूजी के दम्मा हो गइल । माई रोज कवनो-ना-कवनो रोग कछलहीं रहेले । चाचा माइए से आजीज आके अलगा हो गइलन ! लइका देखीं त हम, खयका बनाईं त हम, भँइस गोसि के सानी-पानी करीं, गवंत लागाईं त हम । माई अपना हाथे खरो ना टारे । दस बरिस से दिन-रात चंग पर चढ़ल रहीला, मिजाज चरखा भइल रहेला, अतनों साँस ना मिले कि अएना में सुबहित मुँह देखीं ।' सोचत-सोचत कुंती के बुझाइल कि ओकरा देह में देहे नइखे ।

अठमी के चनरमा, सड़ल तरबूजा के फाँक लेखा, बाँस के फुलुँगी में अझुराइल रहे-फीका, उदास, सकुचाइल । मारे धूर के असमान सिलेट लेखा सावर लागत रहे । पानी में डूबल-डूबल कुंती कठुआ गइल रहे, पँड़री चढ़े लागल रहे । ऊ गते से आपन गोड़ पानी से बाहर निकाल लेलस । एक मन कइल कि घइला भर के घरे चलीं । ढेर रात बीत गइल । बाकि ओकरा से टकसल ना गइल, आलस ओकर गत्तर गत्तर बान्ह देले रहे । कुंती गते से एगो खपड़ा टकटोर के अपना एँड़ी के मइल छोड़ावे लागल ।

चिंता के टूटल धागा फिर जोड़ा गइल । एने तीन साल से त हमरा अपने चुप-चाप बइठे के मन ना करे ! जहाँ अकेले बइठ, मन में किसिम-किसिम के विचार उठे लागेला । ई सभ सोचला से

फयदा ? बाकि जहाँ इचिको सँवास लागल कि फिर बैताल ओही डाढ़ पर । मनवाँ खराबे बात देने झुकेला । एही से जान-बूझ के हरदम अपना के काम में बझवले रहीला । जेतना हमउमरिया सखी-सहेली रही सन, सभ के बिआह कहिए भइल । कय गो त लरकोरियो हो गइली सन । जहाँ ऊ सब बइठिह सन खाली ससुरा के बात, अपना मरद के बात । खोद-खोद के दोसरा से पूछिह सन आ रस ले-ले कहिह सन । हमरा त ई सुनल इचिको नीमन ना लागे; बाकि केहू सुनइबे करे त का कान मूँद लिहीं ? झूठ काहे के कहीं, जहिया ई सब सुनीला नींद ना लागे, सउँसे रात करवटे बइलत बीतेला । मने-मने हमहूँ सपना देखे लागीला कि कइसन हमार ससुरा होई, कइसन सास के सुभाव होई, सवांग खिसियाह मिलिहें कि मिठबोलिया ? ऊँह, कइसनो मिलस । आपन आपन भाग ह । नइहर में सौतेली मतारी के दिन-रात के किचकिच से त नीमने होई । माई के बोली हइस ? बुझाला कि चइली से मारत होखे । बाबुओजी के मत नूँ फेर देले बिया । परियार साल बाबूजी एक जगे ठीक-ठाक कइलन, त माई ठेन बेसाह देलस कि एह साल बैल किनाई । बँटइया पर खेती ना होई, अपने हर चली । जब रोपेया बैल में उठ गइल, हमार तिलक कहाँ से दियाव ? परसाल फिर बाबूजी एक जगे बात चलवलन । लइकवा दोहाह रहे । डाकपीन के काम करत रहे । एक तरे से सब कुछ पक्के रहे । सखी-सहेली में केहू हमरा के 'मनीआडरवाली' कह के चिढ़ावे, केहू 'लिफाफा-पोसकाटवाली'

कह के चउल करे । हमहूँ मने-मने गाजत रहीं कि दोआह बा, त का ह ? करकसा मतारी से त जान बाँची । बाकि माई बेंड़ देली कि हम अपना जीयत जिनगी कुंती के बिआह दोआह बर से त ना होखे देब, नाहीं त सब केहू मेहना मारी कि सवत के बेटी रहइन, एही से दोआह के गले मढ़ देली, जिनगी भर के अकलंक के अपना माथे लिही ? बाबूजी त हर बात में माई के मुँह जोहत रहेलन । लागल बात कट गइल । भितरिया बात त हम जनबे करीला । माई सोचली कि कुंती चल जाई, त लइका के खेलाई ?

कुंती के बुझाइल कि ओकरा कंठ में कुछ अँटक गइल बा आ दुखाता । पँजरी आ हँसुली के हाड़ में जइसे टभक अमा गइल होखे, माथा के नस के जइसे केहू ताँत लेखा तान देले होखे आ ऊ टन्-टन् बाजत होखे । कुंती के साँस तेज चले लागल आ गरम साँस के धार ओकरा ओठ पर साफ बुझात रहे । गदराइल देह समुन्दर के हल्फा लेखा साँस के ताल पर उभरत रहे, डूबत रहे; ओठ रह-रह के ओइसहीं काँप जात रहे जइसे भोरहरिया के हवा में बबूर के पतई काँप जाला । बहुत दूर पर मनियारा साँप के कतार लेखा छोटी लैन छकछकात चलल जात रहे । मधिम अँजोरिया बेरमिया लेखा बेदम होके गते हाँफत रहे । कुंती के एगो लमहर ठंढा साँस निकल गइल आ ओकर सउँसे देह लूक में पड़ल मोजराइल आम के गाछ लेखा सिहरे लागल ।

'अइसे कबतक चली ? डेगे-डेग खाई-खंधक बा । ओह

दिन अछैबट सिंह के छत पर गेंहू सुखावे गइल रहीं, त उनकर भगिना गते से आके हमार नाँव पूछे लागल । सुनीला जे पटना पढ़ेला। मन त भइल कि खूब सुना दिहीं कि बहरकू तोरा हमरा नाँव से मतलब? बाकि पित्त घोंट के रह गइलीं । हमार खिसिआइल मुँह देख के ऊ अपने लवट गइल । बिरीछ काका के बेटवा के भी ऊहे हाल, जहाँ हम ताल में नहाए अइलीं कि केवाड़ी का दोबा में लुका के अपना दलान पर से घंटन निहारल करी । मउगा कहीं का । मन त करेला कि कान धर के मारीं दू थप्पड़ । सींक अइसन त बाड़न, एको थप्पड़ के मउआर ना होइहें आ रसिया बने के सवख बा । आ बंसियो का कम आफत कइले बा, सिलिक मिरजई पेन्ह के दिन भर में चार भाँवर हमरा गली में फेरा लगावेला । हम का ओकर रंग-ढंग ना चीन्हीं ? बाकि बोले-उले ना । जहिया टोकलन, अइसन उघटब कि फेन हमरा सोझा आवे के नाँवें ना लीहें । बाकि कब तक ? अइसे कहिया ले चली?

कुंती के बुझात रहे कि साँप के बिख के लहर ओकरा देह में उठ रहल बा आ गोंइठा के धुआँ में जइसे ओकर दम घोंट रहल बा आ ओकर गत्तर अब पारा लेखा चारो देने छितरा जाई । गाँव के दखिन सिवान पर कुकुर भोंकत रहसन । खेत में सियार फेंकरत रह सन । काली माई के मंदिल से पाठ कर के चरित्तर काका लवटल आवत रहन । उनका खड़ाऊँ के खटर-खटर साफ सुनात रहे । कुंती सोंचलस कि एह रात के चरित्तर काका ओकरा के ताल किनारे

बइठल देखिहें, त का सोचिहें ? झप्प से घइला बुड़का के घरे चलल । निकसार के बगल में तनी दहिने हट के नेनुआ के लत्तर चढ़ावल रहे । ओहिजा कुछ आहट बुझाइल । कुंती चिहा के पुछलस-'के ह'?

बंसी के काँपत, खखन से भरल आवाज आइल-'हमार किरिया, तनी एगो बात सुन जा ।'

मारे घबराहट के कुंती के हाथ-गोड़ काँपे लागल । ऊ धड़ से निकसार के भीतर जाके केवाड़ी के पल्ला भिड़का लेलस । एह समय ओकरा अपना करेजा के धड़कन साफ सुनाई देत रहे । ओकरा माथा पर पसेना चुहचुहा आइल रहे आ साँस बहुत तेज हो गइल रहे । घइला थवना भिरी रख के ऊ मने-मने बंसी के खूब गरियवलस ।

आँगन में माई ना रहे । लइका सभ दँवरी लेखा खटिया पर पटाइल रह सन । बाबूजी के घर में दिया बरत रहे । पल्ला ओठँघावल रहे आ बुदुर-बुदुर के आवाज आवत रहे । आपन नाँव सुन के कुंती गोड़ जाँत के गते से जाके केवाड़ी में कान लगा के सुने लागल । माई बाबूजी के समझावत रहे -'एह साल कुंती के बिआह के नाँव लेल त ठीक ना होई । तोहार बेरामी एह साल बहुत उखड़ गइल बा । चल, बनारस रह के दवाई करावे । हमहूँ ओहिजा डाक्टर से जाँच कराइब ।'

बाबूजी कहलन -'से त बड़ले बा, बाकि लोग-बाग अब अँगुरी उठावता, जवान-जहान बेटी के कबले कुआँर रखबू ?'

माई तड़प के बोललीं - 'वाह रे, लोग-बाग कहीं त कुँइयाँ में कूद जाइब ? एह साल ना सही, अगिला साल सही ? कवनो मछरी ह जे सड़ल जात विया ।'

बाबूजी मान गइलन-'ई त ठीके कहत बाड़ू । कवनों मछरी त ह ना जे सड़ जाई । परे साल सही ।'

कुंती के बुझाइल कि पचासो बिच्छू एक साथ डंक मार देलन । बेहोसी में अपना खटिया देने बढ़ल, बाकि अचक्के ओकर गोड़ लगे जूठ थरिया में पड़ गइल । झन्न से आवाज भइल । माई भीतरे से चिचिया के पुछलस-'काहे रे कुंतिया, का भइल ?'

कुंती के फफक-फफक के रोए के जीव करत रहे । मन करत रहे कि लाज-लिहाज के छोड़ के बाबूजी से अभी जा के कह दे कि बेटी मछरी ह बाबूजी, पानी के बाहर कब तक जिही ? सड़ी ना, त बिलाई ले भागी ।

कसहूँ रोआई जाँत के कहलस -'कुछ ना रे माई, बिलार रहे एगो । भागऽ, बिल्, बिल्....।'

❑

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'मछरी' कवना विधा के रचना ह ?
2. 'मछरी' के लेखक के नाँव बताईं ।
3. 'मछरी' के मुख्य पात्र के ह ?

   (क) कुंती, (ख) अछैबट सिंह,

   (ग) बिरीछ काका (घ) केहू ना ।
4. मछरी में कवन समस्या उठावल बा ?

   (क) नारी समस्या, (ख) धार्मिक समस्या,

   (ग) वैज्ञानिक समस्या, (घ) कवनो समस्या ना ।
5. रामेश्वर सिंह काश्यप के जन्म कवना जिला में भइल रहे ?

   (क) पटना, (ख) सासाराम, (ग) सारण, (घ) पूर्वी चम्पारण ।
6. कुंती के बैल कइसन रहे ?

   (क) सोकना, (ख) धवरा,

   (ग) करिया, (घ) कवनो बैल ना रहे ।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. माई के मरे के बेरा कुंती के उमिर केतना रहे ?

2. सौतेली माई कुंती के शादी काहे ना होखे देस ?
3. कुंती के बाबू जी के कवन बेमारी हो गइल रहे ?
4. कुंती के चरित्र-चित्रण करीं ।
5. मनोवैज्ञानिक दृष्टि से 'मछरी' कहानी के समीक्षा करीं ।
6. ताल के पानी में गोड़ लटका के बइठल कुंती का कइसन अनुभव होत रहे ? ओह बेरा के दृश्य के वर्णन अपना शब्द में लिखीं ।
7. कहानी से दस गो मुहावरा चुन के लिखीं आ ओकर अर्थ बतलाई ।
8. कुंती घर में कवन-कवन काम करत रहे ?
9. कुंती जान-बूझ के अपना के हरदम काम में काहे बझवले रहेले ?
10. कुंती का घर में के-के बा ? सबकर नाँव लिखीं ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'मछरी' कहानी के सारांश लिखीं ।
2. भोजपुरी कहानी के विकास में 'मछरी' के स्थान निरूपित करीं ।
3. 'मछरी' नारी जीवन के दुःख भरल कथा ह । एह कथन के समीक्षा करीं ।
4. एह कहानी के शीर्षक 'मछरी' काहे राखल बा ?
5. एह कहानी के कवनो दोसर नाँव सुझाईं आ ओकरा औचित्य के समुझा के लिखीं ।

परियोजना-कार्य

1. झाड़-फूँक ओझा-गुनी से इलाज करावे के क्रम में होखे वाला मौत के विवरण इकट्ठा करीं ।
2. 'मछरी' कहानी के ध्यान से पढ़ीं आ चुन के लिखीं ।
   (क) दस गो अइसन शब्द प्रयोग जवन खास कके भोजपुरिये में प्रयोग होला जइसे-मइलछहूँ लाल अँजोर, अनरवाह कइल, डँहकावत रहल, हँड़साखिन आदि ।
   (ख) पाठ में से दस गो खास भोजपुरिया शब्द चुनीं आ ओकर खासियत बतलाईं ।

अध्याय चार

धरनीदास

[धरनीदास सारण जिला के माँझी के रहनियार रहीं । इहाँ के संत कवि रहीं । आजो इहाँ के मठ माँझी में बा । इहाँ के दूगो ग्रंथ बा –'प्रेम प्रकाश' आ 'शब्द प्रकाश' । संत धरनीदास के कविता में साढ़े तीन सव बरिस पहिले के भोजपुरी भाषा के नमूना सुरक्षित बा । इहाँ के कविता सरल आ सहज बा ।]

धरनीदास

: 1 :

बहुत दिनन पिय बसल बिदेसा ।
आजु सुनल निज अवन संदेसा ॥1॥
चित चितसरिया मैं लिहलों लिखाई ।
हृदय कमल धइलों दियना लेसाई ॥2॥

•

प्रेम पलंग तहँ धइलों बिछाई ।
नखसिख सहज सिंगार बनाई ॥3॥
मन हित अगुमन दिहल चलाई ।
नयन धइल दोउ दुअरा बैसाई ॥4॥
धरनी धनि पल पल अकुलाई ।
बिनु पिया जिवन अकारथ जाई ॥5॥

(बानी 1/2)

: 2 :

जहिया भइल गुरू उपदेस । अंग अंग के मिटल कलेस ॥1॥
सुनत सजग भयो जीव । जनु अगिनी परे घींव ॥2॥
उर उपजल प्रभु प्रेम । छुटि गे तब ब्रत नेम ॥3॥
जब घर भइल अँजोर । तब मन मानल मोर ॥4॥
देखे से कहल न जाय । कहले न जग पतियाय ॥5॥
धरनी धन तिन भाग । जेहि उपजल अनुराग ॥6॥

1. पाठशाला, चित्रशाला ।

अभ्यास

बहुविकल्पी/वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. धरनीदास जी एह पद में 'धनि' का रूप में केकर वर्णन कइले बाड़े ?

   (क) परमात्मा के (ख) आत्मा (जीव) के

   (ग) गुरु के (घ) संसार के

2. जिनगी कब अकारथ (व्यर्थ) होले ?

   (क) संसार में आदमी का जब सुख ना मिले ।

   (ख) आदमी का जब धन-सम्पदा ना मिले ।

   (ग) जब ईश्वर से मिलन ना होखे ।

   (घ) जब आदमी जिनगी भजन-कीर्तन में गँवा देला ।

3. धरनीदास का अनुसार आदमी का हृदय में अँजोर कब होला ?

   (क) जब दीया लेस के धइल जाला ।

   (ख) जब गुरु का उपदेस से हृदय में प्रभु-प्रेम उपजेला ।

   (ग) जब आग में घीव पड़ेला ।

   (घ) जब अंग-अंग के कलेस मिट जाला ।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. धरनीदास केकरा के भाग्यशाली मनले बानी ?

2. ईश्वर के जे देख लेला, ऊ कुछ कह ना पावे आ कहलो पर संसार पतिआय ना, काहे ?
3. जब हृदय में प्रभु-प्रेम उपजेला तब आदमी से कवन चीझ छूट जाला ?
4. आदमी के कलेस कब मिट जाला ?
5. आत्मा रूपी प्रेमिका हर पल काहे अकुलाइल बिआ ?
6. जीव का सुन के सजग हो जाला ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बहुत दिन से विदेश में बसल पिया का आवे के सनेस पाके धनि मिले बदे का-का तइयारी कर रहलि बिआ ?
2. आध्यात्मिक विकास में गुरु का उपदेस के का महत्त्व होला ?
3. धरनीदास का कवनो एगो पद के अर्थ अपना शब्द में लिखीं ।
4. प्रभु-मिलन के सनेस सुनि के अकुलात जीवात्मा के वर्णन करीं ।

परियोजना कार्य

1. रउवा अगल-बगल का गाँव में केहू संत भइल होखे त ओकरा जीवन आ विचार के बारे में पता करीं ।